

# डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, पवित्र आत्मा और मसीह के साथ एकता, सत्र 9, मसीह के साथ एकता के लिए आधार , जॉन का सुसमाचार 6 और 10

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा पवित्र आत्मा और मसीह के साथ एकता पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 9 है, मसीह के साथ एकता के लिए आधार, यूहन्ना का सुसमाचार, यूहन्ना 6 और 10।

हम यूहन्ना के सुसमाचार में मसीह के साथ एकता के अपने अध्ययन को जारी रखते हैं।

हम उस बिंदु पर पहुँच गए हैं जहाँ हम यूहन्ना 6 में उद्धार में पिता और पुत्र की भूमिकाओं के परिदृश्य को देख रहे हैं। इस परिदृश्य में मेरे पास छह बिंदु हैं। यह पॉल की भाषा से अलग है, लेकिन इसमें शिक्षाओं या विषयों का ओवरलैप है। पिता लोगों को पद 37 और 39 में पुत्र को देता है। यह यूहन्ना के चुनाव के तीन चित्रों या विषयों में से एक है।

तीन विषय हैं यीशु, शास्त्र में अद्वितीय रूप से, यूहन्ना 15 में, चुनाव के लेखक होने के नाते, और मुझे छंदों को सही ढंग से समझना है, यूहन्ना 15:16 और 19, शास्त्र में अद्वितीय रूप से, यीशु उन छंदों में उद्धार के लिए चुनाव के लेखक हैं। परमेश्वर के लोगों की पूर्ववर्ती या पूर्व पहचान। तुम विश्वास नहीं करते, यीशु यूहन्ना 10 में अपने शत्रुओं से कहते हैं, क्योंकि तुम मेरी भेड़ नहीं हो।

मेरी भेड़ें मेरी आवाज़ सुनती हैं, वे मेरा अनुसरण करती हैं, मैं उन्हें अनंत जीवन देता हूँ और वे कभी नाश नहीं होंगे। अर्थात्, ऐसे मनुष्य हैं जिन्हें केवल परमेश्वर और उसके पुत्र और आत्मा ही परमेश्वर के लोगों के रूप में जानते हैं, इससे पहले कि वे विश्वास करें। उनके पास एक पूर्ववर्ती या पूर्व पहचान है, और यीशु में उनका विश्वास उस पहचान को प्रकट करता है, कम से कम उनके लिए।

यीशु को शुरू से ही पता था, यूहन्ना 6, कि कौन उस पर विश्वास करेगा और कौन उस पर विश्वास नहीं करेगा। तीसरी तस्वीर यहाँ दी गई है। पिता यूहन्ना 17 में महान पुरोहितीय प्रार्थना में लोगों को पुत्र को सौंपता है।

पिता से पुत्र को लोगों को देना, यह दिव्य चुनाव, उस अध्याय में पुत्र की सेवकाई को निर्धारित करता है, जैसा कि हम बाद में देखेंगे, प्रभु की इच्छा से। पिता लोगों को पुत्र को देता है; दूसरे शब्दों में, वह लोगों को उद्धार के लिए चुनता है, और वह उन्हें वास्तव में बचाने के लिए पुत्र को सौंपता है। पिता आगे लोगों को पुत्र की ओर खींचता है, यूहन्ना 6 का 44, लेकिन कोई भी मेरे पास नहीं आ सकता जब तक कि पिता जिसने मुझे भेजा है, उसे न खींचे।

तीसरा, जैसा कि हम आयत 35 से देखते हैं, जब लोग यीशु के पास आते हैं, तो इसका मतलब है कि वे उस पर विश्वास करते हैं। यहाँ समानता स्पष्ट है। मैं जीवन की रोटी हूँ; जो कोई मेरे पास आएगा, वह भूखा नहीं रहेगा, और जो कोई मुझ पर विश्वास करेगा, वह प्यासा नहीं रहेगा, जबकि यीशु पर विश्वास करना यीशु के पास आने के समान है।

इस प्रकार, श्लोक 44 में, कोई भी मेरे पास नहीं आ सकता, कोई भी मुझ पर विश्वास नहीं कर सकता जब तक कि पिता जिसने मुझे भेजा है, उसे न खींचे। यूहन्ना का खींचना पौलुस के बुलावे के समान है। पिता लोगों को पुत्र को देता है, और वह उन्हें चुनता है।

पिता लोगों को पुत्र की ओर आकर्षित करता है। वह प्रभावशाली ढंग से उन्हें अपने पास बुलाता है या पुत्र के पास बुलाता है कि वे उस पर विश्वास करें। और फिर लोग विश्वास करते हैं, वे आते हैं, वे पुत्र पर विश्वास करते हैं। श्लोक 37, श्लोक 40, 44, 45, 47, श्लोक 65 की तुलना करें, सभी जगह।

वे अनन्त जीवन प्राप्त करते हैं, यह इस चित्रमाला में चौथा बिंदु है। मुझे लगता है कि अगर यह एक चित्रमाला है, तो चौथा दृश्य, चौथी तस्वीर। हम इसे श्लोक 40 और 47 में देखते हैं: वे अनन्त जीवन प्राप्त करते हैं, और पुत्र उन्हें बचाए रखेगा।

यह संरक्षण का सिद्धांत है, परमेश्वर अपने लोगों और उनके उद्धार को तब से बनाए रखता है जब तक वह उन्हें अपने पास नहीं ले आता जब तक कि वह उन्हें मृतकों में से जीवित नहीं कर देता। हम इसे यूहन्ना 37 में देखते हैं, और जो कोई मेरे पास आता है, मैं उसे कभी बाहर नहीं निकालूंगा। हम इसे 39 में देखते हैं, यह पिता की इच्छा है, जिसने मुझे भेजा है, कि जो कुछ उसने मुझे दिया है, उसमें से मैं कुछ न खोऊँ, बल्कि उसे अंतिम दिन फिर से जीवित कर दूँ।

यीशु अपने लोगों में से किसी को नहीं खोता; वह उन्हें रखता है, और उन्हें सुरक्षित रखता है। और अंत में, पुत्र उन्हें अंतिम दिन जीवित करेगा। 39 और 40 में से कुछ को एक साथ रखें: यह मेरे पिता की इच्छा है, कि जो कोई भी पुत्र को देखता है, और उस पर विश्वास करता है, उसे अब अनन्त जीवन मिले, और मैं उसे अंतिम दिन जीवित करूँगा।

तो यहाँ एक चित्रमाला है। पिता लोगों को पुत्र को सौंपता है, श्लोक 37, 39। पिता लोगों को पुत्र की ओर खींचता है। वह उन्हें प्रभावशाली ढंग से बुलाता है।

आयत 44, 45, तुलना करें 65. लोग पुत्र पर विश्वास करने लगते हैं; यह उद्धार करने वाला विश्वास है। 37, 40, 44, 45, 47, तुलना करें 65 फिर, वे अनन्त जीवन प्राप्त करते हैं।

पुत्र उन्हें बचाए रखेगा, आयत 37, 39। पुत्र उन्हें अंतिम दिन जिलाएगा, आयत 39, 40, और 44, तुलना करें 54।

मैं तीन महत्वपूर्ण धार्मिक निष्कर्ष निकालने से पहले इसे फिर से करने जा रहा हूँ, लेकिन इस बार मैं आयतों का उल्लेख नहीं करूँगा। यहाँ पैनोरमा है। पिता लोगों को पुत्र को देता है। वह उन्हें उद्धार के लिए चुनता है।

पिता लोगों को पुत्र की ओर आकर्षित करता है , और वह उन्हें प्रभावशाली ढंग से पुत्र की ओर बुलाता है। लोग यीशु के पास आते हैं। अर्थात्, वे उस पर विश्वास करते हैं।

चौथा, वे अनन्त जीवन प्राप्त करते हैं, जो यीशु उन्हें देता है। यीशु के बारे में यूहन्ना की प्रमुख तस्वीरों में से एक इस सुसमाचार में अनन्त जीवन के दाता के रूप में है। पुत्र उन्हें बचाए रखेगा; यह परमेश्वर का अपने लोगों का संरक्षण है।

अंत में , पुत्र उन्हें अंतिम दिन जीवित करेगा। मसीह के साथ एकता को समझने की पृष्ठभूमि से संबंधित तीन महत्वपूर्ण धार्मिक बिंदु हैं, जो चौथे सुसमाचार में सिखाया गया है।

सबसे पहले, त्रित्ववादी व्यक्तियों के बीच श्रम का विभाजन है। यदि आप इसे ध्यान से सुन रहे हैं, तो आप कहेंगे, एक मिनट रुकिए, यह त्रित्ववादी व्यक्ति नहीं है। यह दो त्रित्ववादी व्यक्ति हैं, तीन नहीं। आप सही हैं; इन आयतों में आत्मा का उल्लेख नहीं किया गया है, और यह पिन्तेकुस्त और उसके बाद के संदर्भ में पवित्र आत्मा के बारे में सिखाने की यूहन्ना की आदत के अनुरूप है।

ओह, आत्मा जॉन 3 में पुनर्जन्म वाले मार्ग के साथ प्रकट होती है, और वह जॉन के पहले 12 अध्यायों में अन्य स्थानों पर यीशु के जीवन में प्रकट होती है, लेकिन मुख्य रूप से, आत्मा को यीशु द्वारा पिन्तेकुस्त पर आने और तब अपना कार्य करने के रूप में भविष्यवाणी के रूप में देखा जाता है। तो, यह पिता और पुत्र हैं जो इन आयतों में हैं, लेकिन त्रित्ववादी व्यक्तियों के बीच श्रम का विभाजन है। पिता लोगों को पुत्र को देता है , उन्हें अपने पास खींचता है, वे आते हैं, उन्हें अनंत जीवन मिलता है, और पुत्र उन्हें रखता है और उन्हें उठाएगा।

दूसरा, एक त्रित्ववादी या कम से कम द्वित्ववादी है , और व्यवस्थित विज्ञान इसे ईश्वरत्व के व्यक्तियों के बीच एक त्रित्ववादी सामंजस्य बनाता है, और वे ईश्वर के लोगों के लिए काम कर रहे हैं। इस मार्ग में पिता और पुत्र के बीच एक सामंजस्य है, और व्यवस्थित धर्मशास्त्र इसे एक कदम आगे ले जाता है और कहता है कि जब हम नए नियम में कही गई सभी बातों को ध्यान में रखते हैं, खासकर पॉल, तो त्रित्व के व्यक्तियों के बीच एक सामंजस्य है। उदाहरण के लिए, हम इसे इफिसियों 1: 3-14 में बहुत जोरदार तरीके से देखते हैं।

हम इसे 1 पतरस 1:1 और 2 में भी देखते हैं, जिस पर हम ध्यान नहीं देंगे। तीन महत्वपूर्ण धार्मिक निष्कर्ष। त्रित्ववादी व्यक्तियों के बीच श्रम का विभाजन है।

उनके पास करने के लिए काम है, और वे अपना काम करते हैं, और वे इसे, दूसरे, सामंजस्यपूर्ण ढंग से करते हैं।

तीसरा, परमेश्वर के लोगों की पहचान में एक निरंतरता है। हम फिर से पहचान के विषय पर वापस आ गए हैं।

ये वही लोग हैं जिन्हें पिता पुत्र को देता है, पुत्र के पास खींचता है, जो उसके पास आते हैं, जो उस पर विश्वास करते हैं, जो अनंत जीवन प्राप्त करते हैं, जिन्हें पुत्र रखता है, और जिन्हें पुत्र अंतिम

दिन जिलाएगा। ये वे लोग हैं जिन्हें पिता पुत्र को देता है जिन्हें वह अंतिम दिन जिलाएगा। तो यह पहले चरण से छठे चरण तक जाता है।

यह वही है जो श्लोक 39 में कहा गया है। जिसने मुझे भेजा है उसकी यही इच्छा है कि जो कुछ उसने मुझे दिया है, उसमें से मैं कुछ न खोऊँ, बल्कि उसे अंतिम दिन फिर से जीवित कर दूँ। हमारे व्यवस्थित अनुमान के अनुसार पिता, पुत्र और आत्मा के बीच श्रम का विभाजन है।

है। जिन्हें पिता चुनता है, पुत्र उन्हें अनंत जीवन देता है, उन्हें सुरक्षित रखता है, और उन्हें फिर से जीवित करता है। परमेश्वर के लोगों की पहचान में एक निरंतरता है।

यह वही लोग हैं जिन्हें पिता पुत्र को देता है, जो अंततः अंतिम दिन अनन्त जीवन के लिए पुत्र द्वारा उठाए जाते हैं। ओह, उनके पास अब अनन्त जीवन है, और यही यूहन्ना के अनन्त जीवन की मुख्य तस्वीर है। यह विश्वासी का वर्तमान अधिकार है, लेकिन यहाँ यीशु जाता है... इसलिए, यूहन्ना के युगांतशास्त्र को बड़े पैमाने पर सही ढंग से सिखाया जाना सिखाया जाता है, लेकिन भविष्य का युगांतशास्त्र भी है, और हम इसे यहाँ आयत 39, 40, 44 और 54 में मृतकों के पुनरुत्थान के इन उल्लेखों में देखते हैं।

यीशु जीवन की रोटी है। यह छवि उसके व्यक्तित्व पर केंद्रित है, और उस रोटी को खाना उसके साथ एकता की बात करता है। पद 36 से 47 के ढांचे के भीतर, यीशु पद 48 से 51 में जीवन की रोटी के बारे में अपना प्रवचन फिर से शुरू करता है, जिसे मैं पहले ही पढ़ चुका हूँ।

यीशु जंगल में इस्राएलियों को दिए गए मन्ना की पूर्ति हैं। मन्ना ने उनका पूर्वाभास कराया। यीशु जीवन की सच्ची रोटी हैं।

यूहन्ना के अर्थ में, सत्य का अर्थ झूठ के विपरीत सत्य नहीं है। मन्ना जीवन की असली रोटी थी, लेकिन यूहन्ना के अर्थ में, सत्य का अर्थ है पूर्ण अर्थ। इसलिए, यूहन्ना 15 में, यीशु कहते हैं, मैं सच्ची दाखलता हूँ।

इस्राएल झूठी दाखलता नहीं थी, लेकिन यह अधूरी थी। यह परमेश्वर की ओर से अपने प्रबन्धन में विफल रही। यशायाह 5 में, प्रभु ने फल की तलाश की और सड़े हुए फल पाए।

यीशु सच्ची दाखलता है, शास्त्रों में वर्णित उस चित्र की अंतिम पूर्ति, यदि आप चाहें तो परम इस्राएल, जो अपने लोगों के जीवन में वास्तव में फल लाता है। इसी तरह, यीशु सच्चा मन्ना है। पुराने नियम में मन्ना मसीह का एक प्रकार मात्र है।

प्रकार पुराने नियम के ऐतिहासिक व्यक्ति, घटनाएँ या संस्थाएँ हैं, जिनमें ऐतिहासिक लोगों, कार्यों और संपूर्ण संस्थाओं पर जोर दिया जाता है, जिनका पुराने नियम के छुटकारे के इतिहास में एक कार्य है, लेकिन जिनका मसीह के जीवन और कार्य की ओर इशारा करते हुए एक बड़ा युगांतकारी कार्य है। इसलिए, रोमियों 5.16 के अनुसार आदम मसीह का एक प्रकार है। आदम आने वाले व्यक्ति का प्रकार है। इब्रानियों 7 के अनुसार, शालेम का रहस्यमय राजा-पुजारी, जिसे

अब्राहम दशमांश देता है, मसीह के अपने ऐतिहासिक व्यक्तित्व में एक प्रकार, एक पूर्वरूप है, जो वास्तव में शांति लाने वाला अंतिम राजा-पुजारी है।

प्रतीक व्यक्ति और घटनाएँ हैं। हमने लूका 9:31 में मूसा और एलिय्याह को रूपान्तरण पर्वत पर प्रकट होते देखा। निश्चय ही वे क्रमशः व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता हैं।

मूसा और एलिय्याह यीशु से उसके पलायन के बारे में बात कर रहे हैं जो कि यूनानी शब्द है, जिसे वह यरूशलेम में पूरा करने वाला है। बेशक, अनुवादों में मृत्यु का अनुवाद किया गया है। उन्होंने संभवतः यूनानी शब्द पलायन को हाशिये पर लिखा है।

यह एक अध्ययन बाइबल थी, यह कहेगा, इस प्रकार यह दर्शाता है कि पुराने नियम की छुटकारे की महान घटना, मिस्र से पलायन, यरूशलेम के बाहर क्रूस पर यीशु द्वारा किए गए महान छुटकारे की ऐतिहासिक पूर्वसूचना का एक प्रकार है। इसलिए प्रकार व्यक्ति, घटनाएँ और संस्थाएँ हैं। परमेश्वर ने व्यवस्थाविवरण 18 में भविष्यवाणी क्रम निर्धारित किया।

मैं इस्राएल के लिए मूसा की तरह एक भविष्यवक्ता को खड़ा करूँगा, और मैं उसके मुँह में अपने शब्द डालूँगा, और जो वह कहेगा वह कभी विफल नहीं होगा। यह पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं की पूरी पंक्ति की भविष्यवाणी है जो कि, जैसा कि प्रेरितों के काम की पुस्तक हमें बताती है, महान और अंतिम भविष्यवक्ता, प्रभु यीशु मसीह में समाप्त होती है। अंतिम भविष्यवक्ता, क्या नए नियम के भविष्यवक्ता नहीं हैं? अरे हाँ, लेकिन वे यीशु की विस्तारित सेवकाई हैं क्योंकि वह अपनी कलीसिया पर आत्मा उंडेलता है।

वे नए नियम के भविष्यद्वक्ता और प्रेरित हैं और वे इब्रानियों 1:1, और 2 के अनुसार उसकी सेवा करते हैं। सभी नए नियम के रहस्योद्घाटन पुत्र हाइफ़न रहस्योद्घाटन, पुत्र रहस्योद्घाटन हैं। पैगंबर पुजारी, हारून का पुजारी क्रम मसीह का एक प्रकार है, हालाँकि प्रभु ने एक अलग पुजारी क्रम की योजना बनाई और उसे स्थापित किया, जो कि मेल्कीसेदेक का था, क्योंकि इस त्रय में उल्लिखित तीसरी संस्था केवल पैगंबर, पुजारी और राजत्व का शाही कार्यालय नहीं है। इसमें एक जनजातीय आवश्यकता थी: एक को यहूदा से होना चाहिए; मसीहा एक साथ दो जनजातियों से नहीं हो सकता था, इसलिए यीशु दाऊद के पुत्र के रूप में यहूदा से है, उसे मरियम से रक्तरखा मिलती है, और अगर उसे अपने सौतेले पिता जोसेफ से कुछ आधिकारिक चीज़ की ज़रूरत होती है, तो उसे वह भी मिल जाती है।

लेकिन वह हारून से नहीं है; वह हारून और यहूदा दोनों से नहीं हो सकता; वह यहूदा से है, और वह एक राजा है, इसलिए परमेश्वर ने मेल्कीसेदेक के माध्यम से एक और पुरोहित वर्ग खड़ा किया, जो बहुत ही अनोखा है, इसमें केवल दो सदस्य हैं, मेल्कीसेदेक और यीशु। किसी भी मामले में, प्रकार यीशु के पुराने नियम के पूर्वाभास हैं, ऐतिहासिक लोग, घटनाएँ, और परमेश्वर द्वारा स्थापित पूरी संस्थाएँ, इतिहास में वास्तविक चीज़ें, वास्तविक लोग और घटनाएँ और संस्थाएँ जो ऐतिहासिक थीं जो अंततः छुटकारे के इतिहास में परमेश्वर के पुत्र और उसके उद्धार, और यहाँ तक कि उसके चर्च की ओर इशारा करती हैं। यहाँ, मन्ना, जो वास्तव में चमत्कारी था, यह क्या है, भोजन, मीठा जैसा कुछ उन्होंने कहा, कुछ ऐसा था जो परमेश्वर ने उन्हें जीवित रखने के

लिए दिया था, लेकिन परमेश्वर की भविष्यवाणी में, यह स्वर्ग से सबसे महान मन्ना, जीवन की रोटी, प्रभु यीशु मसीह की ओर इशारा करता था।

जंगल में मन्ना एक प्रकार की रोटी थी जो स्वर्ग से नीचे आती है, यीशु के शब्दों को उद्धृत करते हुए, अर्थात्, परमेश्वर के पुत्र का मनुष्य बनना। यीशु के संदर्भ में खाना और खिलाना शब्द, इस अंश पर हावी हैं, जो श्लोक 49 से 58 में आठ बार आते हैं। डीए कार्सन, जिनकी जॉन पर टिप्पणी मेरी पसंदीदा है, इसे समझाते हैं।

पिछले श्लोकों में, विश्वास के द्वारा यीशु को ग्रहण करना, उद्धृत करना, इसका अर्थ है उसे खाना, उसका मांस खाना, उससे भोजन प्राप्त करना। यीशु ने क्रूस पर अपने बलिदान में अपना शरीर दिया। जीवित रोटी खाना, उसकी प्रायश्चित मृत्यु पर विश्वास करना है।

फिर से, यीशु के शब्दों पर श्रोता अटक जाते हैं। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। वे कहते हैं कि यह आदमी हमें अपना मांस खाने के लिए कैसे दे सकता है? इन लोगों को यह नरभक्षण जैसा लगता है।

जवाब में, यीशु अपने संदेश को नरम नहीं करते बल्कि इसे उनके कानों के लिए और भी आक्रामक बना देते हैं क्योंकि कानून खून खाने पर रोक लगाता है। और यही वह 53 से 58 में कहता है। वह क्या कर रहा है? क्या वह क्रूर हो रहा है? नहीं, वह दयालु हो रहा है।

और जैसा कि मैं नियमित रूप से बताना चाहता हूँ, प्रेरितों के काम 6:6 में कहा गया है कि बहुत से लोग, यहाँ तक कि पुजारी भी, प्रारंभिक चर्च में प्रेरितों की सेवकाई में यीशु पर विश्वास करते थे। मुझे नहीं लगता कि वे ऐसा करते अगर यीशु में यहूदी नेताओं के सामने बार-बार खड़े होने और शनिवार को चंगा करने और लोगों को अपने व्यक्तित्व की वास्तविकता से रूबरू करवाकर नेतृत्व को अपमानित करने का साहस और दृढ़ विश्वास नहीं होता। अगर उसने उन्हें लोरियाँ गाई होतीं, तो वे परमेश्वर के न्याय तक सो जाते।

इसके बजाय, वह झांझ बजाता है। वह चीजों को हिला देता है। उसने मंदिर में सिक्का बदलने वालों की मेज़ें पलट दीं ताकि आखिरकार उन लोगों पर दया दिखाई जा सके जिन्हें अपनी आध्यात्मिक उदासी से बाहर निकलने की ज़रूरत थी और उन्हें एहसास हुआ कि इस्राएल के नेता भ्रष्ट थे, और उन्होंने परमेश्वर के सच्चे धर्म को विकृत कर दिया था।

यीशु के शब्द स्पष्ट हैं। उसका मांस न खाने और उसका लहू न पीने से लोग अनंत जीवन के अयोग्य हो जाते हैं। उन्हें खाने से अभी अनंत जीवन मिलता है और युग के अंत में पुनरुत्थान का जीवन मिलता है।

हालाँकि ईसाई लोग प्रभु के भोज के बारे में सोचने से खुद को रोक नहीं पाते, लेकिन इन आयतों में उनका मुख्य संदर्भ यीशु की बलिदानपूर्ण मृत्यु है, जिसे, बेशक, प्रभु के भोज में याद किया जाता है और मनाया जाता है, फिर भी यूहन्ना के पास भोज की संस्था नहीं है और इसका कोई सीधा संदर्भ नहीं है। इसे कहने का तरीका यह होगा: यूहन्ना 6 का एक महत्वपूर्ण विषय, जैसा कि हम अभी देखेंगे, मसीह के साथ एकता है। और इस तरह, यूहन्ना 6 की शिक्षा प्रभु के भोज से

संबंधित है क्योंकि पवित्र भोज के बाइबिल में कई अर्थ हैं, लेकिन भोज का सबसे व्यापक, व्यापक, सारांश अर्थ मसीह के साथ एकता है, जिसके अन्य अर्थ उपसमूह हैं।

ईसाई बपतिस्मा के लिए भी यही बात लागू होती है। दोनों अध्यादेश या संस्कार, एक प्रारंभिक संस्कार और दूसरा चल रहा संस्कार, के कई अर्थ हैं, लेकिन उनका सबसे गहरा और व्यापक अर्थ मसीह के साथ एकता है क्योंकि मसीह के साथ एकता मोक्ष के अनुप्रयोग के बारे में बात करने का मुख्य तरीका है। उसे प्राप्त करने से, व्यक्ति मोक्ष के हर पहलू को प्राप्त करता है।

जीवन की रोटी के प्रवचन में मसीह के साथ एकता के निहितार्थ हैं क्योंकि इसमें अनंत जीवन के लिए उसे खाने या खिलाने की भाषा है। हम विश्वास के द्वारा यीशु को ग्रहण करते हैं, उद्धरण चिह्नों में, ताकि वह हमारा एक हिस्सा बन जाए, ठीक वैसे ही जैसे हम जो भोजन खाते हैं। पद 56 में एकता स्पष्ट है।

यह वह रोटी है जो स्वर्ग से उतरी है, न कि उस रोटी की तरह जिसे पूर्वजों ने खाया और मर गए। जो कोई इस रोटी को खाएगा वह हमेशा के लिए जीवित रहेगा। यहाँ जॉन में आपसी निवास या निवास का पहला प्रकटीकरण है।

मुझे 56 पर वापस जाना है। हाँ, मैं आपसे माफ़ी चाहता हूँ। मेरा मांस सच्चा भोजन है, 55।

मेरा खून एक सच्चा पेय है। जो कोई मेरा मांस खाता है और मेरा खून पीता है, वह यहाँ है, मुझमें रहता है, मैंने गलत आयत पढ़ी है, और मैं उसमें हूँ। जैसे जीवित पिता ने मुझे भेजा, और मैं पिता के कारण जीवित हूँ, वैसे ही जो कोई मुझे खाता है वह भी मेरे कारण जीवित रहेगा।

हाँ, तो यह 56 है जो जॉन में पारस्परिक निवास या निवास की पहली उपस्थिति है, जो चौथे सुसमाचार में छह बार होता है। मैं इसे फिर से करूँगा। जो कोई मेरा मांस खाता है और मेरा खून पीता है वह मुझमें रहता है, और मैं उसमें रहता हूँ।

निश्चित रूप से, शब्द 'बने रहना' को एलिप्सिस द्वारा समझा जाता है। जॉन अक्सर पिता और पुत्र के एक दूसरे में निवास करने, दिव्य जीवन को साझा करने की बात करते हैं। हम इसे ग्रीक से पेरिकोरेसिस या लैटिन से सर्कमिन्सेशन या सह-अस्तित्व कहते हैं।

पेरिकोरेसिस, पेरिकोरेसिस, पेरिकोरेसिस, और सर्कमिन्सेशन, सी- आई -आरकम- आई- नेसेस - आई -ऑन, या को-इनहेरेंस, को- आई -एनहेरेंस, दोनों लैटिन, एक बार और स्पेलिंग। पेरिकोरेसिस प्रति -आई है, परिधि की तरह, इसका ग्रीक में अर्थ है चारों ओर। कोरेसिस, कोरेस-आई -एस।

परिधि, जो लैटिन से अंग्रेजी में आती है। परिधि, सी- आई -आरकम- आई- एनसेस - आई -ऑन, चारों ओर होना, या सह-अस्तित्व, सह -आई -एनहेरेंस। आश्चर्यजनक रूप से, यीशु यहाँ अपने संदर्भ में, या अन्य स्थानों पर अपने और पिता, और विश्वासियों के संदर्भ में पारस्परिक निवास की भाषा का उपयोग करता है।

पद 656 में, वह मुझमें रहता है, मैं उसमें रहता हूँ। निश्चित रूप से, त्रिदेवों के व्यक्ति जिस तरह से एक दूसरे में रहते हैं, और जिस तरह से त्रिदेवों के व्यक्ति और विश्वासी एक दूसरे में रहते हैं, उनके बीच अंतर है। हे भगवान, पूरी बात यह है कि त्रिदेवों के व्यक्ति एक दूसरे में कैसे रहते हैं और हम और ईश्वर एक दूसरे में कैसे रहते हैं, इसके बीच समानताएँ हैं, लेकिन हमें अंतरों पर जोर देना चाहिए ताकि हम पर विधर्म सिखाने का आरोप न लगे।

ओह। नंबर एक, त्रिदेव के व्यक्ति दिव्य हैं और रहस्यमय तरीके से, यह सच है, ऑन्टोलॉजिकल रूप से, अनंत काल तक एक दूसरे में निवास करने में सक्षम हैं। एक और अंतर है: दिव्य व्यक्तियों का यह निवास शाश्वत है।

व्यक्ति अस्तित्व के क्रम में, एक दूसरे में निवास करते हैं। इसलिए हम कहते हैं कि एक ईश्वर है, व्यवस्थाविवरण 6:4, 1 तीमुथियुस 2:5, तीन व्यक्तियों में अनंत काल तक विद्यमान है, और यह पारस्परिक निवास शाश्वत है। इसलिए, ईश्वरीय निवास, पेरिकोरेसिस, खतना, या सह-अनुपालन ईश्वर के ईश्वर होने का हिस्सा है।

ईश्वर एक में तीन हैं, और त्रित्ववादी व्यक्तियों में से प्रत्येक ईश्वर का एक तिहाई नहीं है; प्रत्येक व्यक्ति ईश्वर का पूर्ण रूप है। इसलिए ईसाइयों के पास ईश्वर का एक तिहाई हिस्सा नहीं है, और उनके साथ नहीं है; उनके पास पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व में ईश्वर का पूरा हिस्सा है। ये चीजें बहुत ही प्रभावशाली हैं, और जीवन के निहितार्थ आश्चर्यजनक हैं, और मेरे पास वास्तव में निहितार्थ और अनुप्रयोगों पर एक खंड है, जिसे हम अब से कुछ व्याख्यानों के बाद भविष्य के व्याख्यान में प्राप्त करेंगे।

इसलिए, त्रित्ववादी पेरिकोरेसिस, निश्चित रूप से, अद्वितीय है। त्रित्व के व्यक्ति हमारे साथ अपने ईश्वरत्व को साझा नहीं करते हैं, और उनके शाश्वत पारस्परिक निवास के विपरीत, उनके साथ हमारी संगति की शुरुआत हुई थी। लेकिन ईश्वर की सर्वोच्च कृपा से, त्रित्व के पारस्परिक निवास और तीन दिव्य व्यक्तियों के साथ हमारे बीच समानताएँ हैं।

मैं जानता हूँ कि जॉन पवित्र आत्मा को छोड़ देता है; वह आत्मा को पेंटेकोस्ट के बाद के रूप में देखता है, लेकिन एक व्यवस्थित धर्मशास्त्री के रूप में, मैं आत्मा को शामिल करने से खुद को नहीं रोक सकता, और यह तब तक वैध है जब तक मैं कहता हूँ कि जॉन ऐसा नहीं करता। इसलिए मैं बाइबल में कही गई बातों से शुरू करता हूँ और फिर एक व्यवस्थित कदम उठाता हूँ, एक जानबूझकर दूसरा कदम। समानताएँ।

इन समानताओं में ईश्वरीय व्यक्ति की हमारे साथ संगति शामिल है, जो उनके ईश्वरत्व और अनुग्रह के कारण है। 1 यूहन्ना 1:3. हमारी संगति पिता और उसके पुत्र, यीशु मसीह के साथ है।

और समानताओं में त्रिएक के साथ हमारी संगति शामिल है। पहल और महिमा सब परमेश्वर की है। परमेश्वर की।

यदि ईश्वरीय चुनाव, ईश्वरीय प्रायश्चित, तथा उद्धार या मसीह के साथ मिलन के ईश्वरीय अनुप्रयोग में प्रकट ईश्वर की कृपा न होती, तो हम इसके बारे में कुछ भी नहीं जानते, और यह सत्य भी नहीं



होता। पहल और महिमा सब त्रिदेवों की है, लेकिन परिणामी संगति भी हमारी है। जैसे जीवित पिता ने मुझे भेजा है, और मैं पिता के कारण जीवित हूँ, वैसे ही जो मुझ पर भोजन करेगा, वह भी मेरे कारण जीवित रहेगा।

यूहन्ना 6:57. जब मैंने इन व्याख्यानों की शुरुआत में कहा था, तो मेरा यही मतलब था: मसीह के साथ एकता सबसे अद्भुत है, और यह सबसे अधिक विस्मयकारी है। इन बातों को कौन समझ सकता है? केवल परमेश्वर के पास ही जीवन है, और इसलिए वह जीवित पिता है।

यूहन्ना 6:57. जब यीशु कहते हैं, मैं उनके कारण जीवित हूँ, तो वे अवतार में उनके अस्तित्व की बात करते हैं, जो मेरी समझ है। जो लोग विश्वास से मसीह पर भोजन करते हैं, वे भी उनके कारण जीवित रहते हैं।

अर्थात्, पिता और पुत्र में हमेशा रहने वाला शाश्वत जीवन, देहधारी पुत्र में उसके प्रायश्चित और पुनरुत्थान में तथा उसे हम पर लागू करने वाली आत्माओं में हमें संप्रेषित किया जाता है। पतित मनुष्यों के लिए परमेश्वर से एक होने के लिए यह मिलन भी अनिवार्य है। क्षमा करें, अवतार। मैंने जो कहा वह सच है, लेकिन इस व्याख्यान के संदर्भ में, पतित मनुष्यों के लिए उसके साथ एक होने के लिए शाश्वत पुत्र का अवतार अनिवार्य है।

श्लोक 56, एक धार्मिक स्वयंसिद्ध, कोई अवतार नहीं, मसीह के साथ कोई मिलन नहीं। ओह, यह कदम छोड़ देता है। कोई अवतार नहीं, यीशु का कोई पाप रहित जीवन नहीं, यीशु का कोई क्रूस पर चढ़ना नहीं, यीशु का कोई पुनरुत्थान नहीं, हमें मसीह से जोड़ने के लिए पिन्तेकुस्त की पवित्र आत्मा को उंडेला नहीं।

यदि परमेश्वर का पुत्र मनुष्य न बना होता, तो हम विश्वास के द्वारा अनुग्रह से उसके साथ नहीं जुड़ पाते, क्योंकि आत्मा ने हमें मसीह के साथ जोड़ने का काम किया। पाँच अंश, यह तो बस पहला अंश था - यूहन्ना 10:37 और 38 में पिता और पुत्र का परस्पर वास।

इस बार गुड शेफर्ड प्रवचन, जॉन 10:37, अगर मैं अपने पिता के काम कर रहा हूँ, तो मुझ पर विश्वास मत करो। क्षमा करें, अगर मैं अपने पिता के काम नहीं कर रहा हूँ, तो मुझ पर विश्वास मत करो। लेकिन अगर मैं उन्हें करता हूँ, भले ही तुम मुझ पर विश्वास न करो, उन कामों पर विश्वास करो ताकि तुम जान सको और समझ सको कि पिता मुझ में है और मैं पिता में हूँ।

मैं बस उन्हें समय से पहले पढ़ रहा हूँ। बेशक, मैं उन्हें समझाऊंगा, उन्हें संदर्भ में रखूंगा, उन्हें समझाऊंगा, और धर्मशास्त्र को सामने लाऊंगा। इसे व्याख्यात्मक धर्मशास्त्र कहा जाता है।

मैं यही करता हूँ। 35 साल तक जीविकोपार्जन का यह कैसा तरीका है। और अब, सेवानिवृत्ति में, लेखन, संपादन और ये व्याख्यान देते हुए, भगवान की स्तुति करता हूँ।

जब यहूदी उसे मसीहा होने का दावा करने के लिए उकसाने की कोशिश करते हैं, तो यीशु कहते हैं कि वे परमेश्वर के लोगों का हिस्सा नहीं हैं, और इसलिए वे उस पर विश्वास नहीं करते। ओह, श्लोक 26।

तुम विश्वास नहीं करते क्योंकि तुम मेरी भेड़ों में से नहीं हो। ओह, यीशु विश्वास नहीं करते। इधर-उधर की बातें करते रहो।

वाह! एक बार फिर, वह दयालु हो रहा है। उसे अपनी गलती का सामना करना होगा।

लेकिन यीशु के अपने लोग उस पर विश्वास करते हैं। वह उन्हें जानता है, और वे उसकी आज्ञा मानते हैं। वह उन्हें अनंत जीवन देता है, और वे कभी नाश नहीं होंगे।

तुम मुझ पर विश्वास नहीं करते क्योंकि तुम मेरी भेड़ें नहीं हो। मेरी भेड़ें मेरी आवाज़ सुनती हैं। मैं उन्हें जानता हूँ।

वे मेरे पीछे चलते हैं। मैं उन्हें अनंत जीवन देता हूँ। वे कभी नाश नहीं होंगे, और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन नहीं सकेगा।

मेरे पिता ने उन्हें मुझे दिया है, वह सब से बड़ा है, और कोई भी उन्हें उसके हाथ से नहीं छीन सकता। मैं और पिता, भेड़ों को परमेश्वर के लोगों के रूप में सुरक्षित रखने की हमारी क्षमता के संदर्भ में एक हैं। यीशु अपनी भेड़ों, अपने लोगों को, अनन्त जीवन देता है, और वे कभी नाश नहीं होंगे।

कोई भी उन्हें उसके या पिता के हाथ से छीन नहीं सकता। 28, 29. परमेश्वर के लोगों की रक्षा करने में वह और पिता एक हैं।

पद 30. यीशु पर ईशनिंदा का आरोप लगाया जाता है। यहूदी फिर से उसे पत्थर मारने के लिए पत्थर उठाते हैं।

यीशु ने पूछा कि वे उसके किस अच्छे काम के लिए ऐसा करना चाहते हैं। वे क्रोधित हो गए। यहूदियों ने उत्तर दिया, हम तुम्हें अच्छे काम के लिए नहीं, बल्कि ईशनिंदा के लिए पत्थर मार रहे हैं, क्योंकि तुम मनुष्य होकर अपने आप को परमेश्वर बनाते हो।

वे इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि यीशु ने एक लंगड़े आदमी को चंगा किया। अध्याय 5. एक अंधे आदमी को दृष्टि दी। अध्याय 9. इसलिए, वे बातचीत को दूसरी दिशा में मोड़ देते हैं।

वे उसके कथन का उल्लेख करते हैं, मैं और पिता एक हैं। उनके अनुमान के अनुसार, वह, एक साधारण मनुष्य, ईश्वरीय विशेषाधिकारों का प्रयोग करने का साहस करता है, जो अनन्त जीवन प्रदान करने और परमेश्वर के लोगों की रक्षा करने का दावा करता है। यीशु ने यहूदी तर्क का उपयोग करके खुद का बचाव किया, जो कि बड़े से छोटे तक है।

भजन 82 और पद 6 से। यीशु ने यूहन्ना 10:34 से 36 में इसका उपयोग किया है। यदि परमेश्वर ने अधिक कठिन कार्य किया और परमेश्वर के स्थान पर खड़े मानव शासकों को देवता कहा, जो कि भजन 82:6 में ठीक वैसा ही है जैसा उसने किया। उस भजन में, परमेश्वर उन देवताओं से बहुत

खुश नहीं है, क्योंकि वे नहीं हैं, वे उसके स्थान पर खड़े हैं, लेकिन वे न्याय को भ्रष्ट कर रहे हैं ताकि वह उनका न्याय करे। यदि परमेश्वर ने मनुष्यों को, जो पृथ्वी पर उसका प्रतिनिधित्व करते हैं, किसी तरह से शासक या न्यायाधीश के रूप में, देवता कहा, तो यीशु के श्रोता जब वह आसान कार्य करता है तो शिकायत क्यों करते हैं? वह खुद को परमेश्वर का पुत्र कहता है।

पहली नज़र में, यह तर्क मसीह के ईश्वरत्व को साबित नहीं करता। यह बिल्कुल वैसा नहीं है जैसा वह कर रहा है। वह खुद को पुत्र कहने की अपनी क्षमता को उचित ठहरा रहा है।

लेकिन अगर कोई इसे थोड़ा और ध्यान से देखे, तो उसका ईश्वरत्व निहित है क्योंकि वह कहता है, क्या तुम उसके बारे में कहते हो जिसे पिता ने पवित्र किया, यह पवित्र शब्द है, और दुनिया में भेजा, तुम ईशनिंदा कर रहे हो क्योंकि मैंने कहा कि मैं ईश्वर का पुत्र हूँ? वह कहता है कि पिता ने उसे अलग रखा, उसे पवित्र किया, और दुनिया में भेजा। यह एक दिव्य दावा है। यह उसके पूर्व-अस्तित्व का दावा है।

इसलिए, तर्क ही, वाह-मा-होमर यहूदी तर्क, अधिक से कम, कठिन से आसान, इस मामले में, उसके ईश्वरत्व को साबित नहीं करता है। यह उस बिंदु पर उसका इरादा नहीं है, लेकिन इसके विवरण वास्तव में उसके ईश्वरत्व को दर्शाते हैं। श्लोक 38, भले ही तुम मुझ पर विश्वास न करो, उन कामों पर विश्वास करो जो तुम करते हो, जो काम पिता ने मुझे करने के लिए दिए हैं, जो काम मैं करता हूँ।

उन पर विश्वास करो, ताकि तुम जान सको और समझ सको कि पिता मुझमें है, और मैं पिता में हूँ। यहाँ हम फिर से चलते हैं। फिर से, श्रोता उसे गिरफ्तार करने की कोशिश करते हैं, श्लोक 39, क्योंकि उसके दावे बहुत ही शानदार हैं।

वह घोषणा करता है कि जिसे वे अपना परमेश्वर मानते हैं, वह उसमें है, और वह उनके परमेश्वर में है। यहाँ, यूहन्ना में पहली बार, यीशु पिता और पुत्र के परस्पर निवास की बात करता है। यूहन्ना 6 में हमारे अंतिम अंश में, यह यीशु और उसके शिष्यों का परस्पर निवास, या निवास था, वे समानार्थी हैं।

अब, पहली बार, पिता और पुत्र का परस्पर निवास। यह पारस्परिक निवास, फिर से, पेरिचोरेसिस, या परिधि, इस तथ्य का एक महत्वपूर्ण परिणाम है कि ईश्वर पवित्र त्रिमूर्ति है। केवल एक ईश्वर है जो तीन व्यक्तियों, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा में अनंत काल तक विद्यमान है, और ये तीनों केवल अस्तित्व के क्रमिक तरीके नहीं हैं, जैसा कि मोडलिज़्म या मोडलिस्टिक के पाषंड में है प्रारंभिक चर्च में राजतंत्रवाद .

वे केवल ईश्वर के एक अस्तित्व के क्रमिक तरीके नहीं हैं। मोडलिज़्म ने पुराने नियम में कहा कि ईश्वर पिता के रूप में प्रकट हुआ। वही अद्वितीय एकल अस्तित्व, एक में तीन नहीं, सुसमाचारों में पुत्र के रूप में प्रकट हुआ, और पित्तुकुस्त के बाद, वही ईश्वर, अलग-अलग नहीं, एक ही समय में तीन व्यक्तियों में मौजूद नहीं, बल्कि क्रमिक रूप से, पुराने नियम में पिता, सुसमाचारों में पुत्र, पित्तुकुस्त के बाद पवित्र आत्मा।

ईसाई धर्मशास्त्र ऐसा नहीं सिखाता। बल्कि, तीन व्यक्ति एक साथ परमेश्वर में तीन व्यक्तियों के रूप में विद्यमान हैं। हम इसे यीशु के बपतिस्मा में देखते हैं।

पिता स्वर्ग से बोलते हैं, और पुत्र, आत्मा, एक थियोफनी, एक न्यूमेटोफनी के रूप में प्रकट होता है, जो परमेश्वर से नीचे आता है, यीशु पर उतरता है, और उस पर रहता है। अनंत काल से, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, एक ईश्वर रहे हैं। पेरिचोरेसिस, या खतना, इन सत्तों का एक परिणाम है।

यह मानता है कि तीनों त्रिदेव व्यक्ति ईश्वर के एक-तिहाई नहीं हैं, बल्कि प्रत्येक पूर्ण रूप से ईश्वर हैं। पिता ईश्वर का सर्वस्व है। पुत्र ईश्वर का सर्वस्व है।

इसलिए, यीशु कह सकते थे, क्या तुम नहीं समझते, फिलिप, अगर तुमने मुझे देखा है, तो तुमने पिता को देखा है, और आत्मा, जिसका अक्सर इन संदर्भों में जॉन द्वारा उल्लेख नहीं किया गया है, वह सब परमेश्वर है। हाँ, फिर भी वे तीन देवता नहीं हैं, बल्कि केवल एक परमेश्वर है। ईश्वरीय सार की संपूर्णता पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा में निहित है।

यही इस परस्पर निवास का अर्थ है। या दूसरे शब्दों में कहें तो तीनों व्यक्ति परस्पर एक दूसरे के भीतर निवास करते हैं। यह एक ही बात है।

पिता पुत्र और पवित्र आत्मा में निवास करता है। पुत्र पिता और आत्मा में निवास करता है, और आत्मा पिता और पुत्र में निवास करती है। यद्यपि व्यक्ति अलग-अलग हैं, और हमें उन्हें अलग करना चाहिए, वे अविभाज्य हैं।

हमें व्यक्तियों में अंतर करना चाहिए। केवल पुत्र ही नासरत के यीशु में अवतरित हुआ, न कि पिता, न ही आत्मा। केवल पुत्र ने ही पाप रहित जीवन जिया, न कि पिता, न ही आत्मा।

केवल पुत्र ही मरा और तीसरे दिन जीवित होकर संसार का उद्धारकर्ता बना, न कि पिता और न ही आत्मा। फिर भी, वे अविभाज्य हैं। और यहाँ तक कि प्रायश्चित के बारे में भी नए नियम में अविभाज्य शब्दों में बात की गई है, जहाँ 2 कुरिन्थियों 5 में कहा गया है कि परमेश्वर मसीह में था, और संसार को अपने साथ मिला रहा था।

और इब्रानियों 9:14 कहता है, मैं हमेशा कुछ आयतें क्यों भूल जाता हूँ? शायद मुझे एक ईसाई टैटू की ज़रूरत महसूस हो रही है। इब्रानियों 9, हाँ, मैंने सही समझा। 9:14 कहता है, मसीह ने सनातन आत्मा के द्वारा अपने आप को बिना किसी दोष के परमेश्वर को अर्पित किया।

यह वास्तव में मसीह के लहू की बात कर रहा है, जो हमें सभी अधर्म से शुद्ध करता है। मसीह ने, अनन्त आत्मा के द्वारा, पवित्र आत्मा के द्वारा, खुद को बिना किसी दोष के परमेश्वर को अर्पित किया। केवल पुत्र ही क्रूस पर मरा।

लेकिन क्रूस, यदि आप चाहें तो, विशेष रूप से पुत्र का कार्य है। लेकिन दिव्य व्यक्तियों की अविभाज्यता के कारण, परमेश्वर मसीह में था, मेल-मिलाप कर रहा था, 2 कुरिन्थियों 5, और

मसीह ने अपने आप को एक पुरोहिती भेंट और बलिदान के रूप में क्रूस पर अर्पित करते हुए, ऐसा आत्मा के माध्यम से किया। हम व्यक्तियों में अंतर करते हैं।

हम उन्हें कभी अलग नहीं करते। हालाँकि व्यक्ति अलग-अलग हैं, वे अविभाज्य हैं। और उनकी अविभाज्यता को स्वीकार करने का दूसरा तरीका आपसी अंतरनिवास की पुष्टि करना है।

इस प्रकार, क्योंकि पिता पुत्र में निवास करता है और पुत्र भी पिता में निवास करता है, इसलिए यीशु ईशनिंदा का दोषी नहीं है। जब वह बोलता है, तो पिता बोलता है। जब वह कार्य करता है, तो पिता कार्य करता है।

इसके अलावा, यह आपसी निवास, जिसके बारे में यूहन्ना 10.38 में पुष्टि की गई है, अध्याय 14 और 17 में पिता और पुत्र और आत्मा और विश्वासियों के आपसी निवास का आधार है। यह विराम लेने का एक अच्छा समय है क्योंकि आगे, हम यूहन्ना 14 में पिता और पुत्र और उनके और विश्वासियों के आपसी निवास को लेते हैं।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन की पवित्र आत्मा और मसीह के साथ एकता पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 9 है, मसीह के साथ एकता के लिए नींव, यूहन्ना का सुसमाचार, यूहन्ना 6 और 10।